तेरा दीवाना

विवेकानंद भारती

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन, केरल

ये जानता हूँ मैं, यहाँ हर कोई तेरे
कातिलाना अदाओं का दीवाना है।
मगर ये जानकर भी मुझे, तुझसे ही
अपनी हर किस्मत आज़माना है॥

ढल गए गुरूर सैकड़ों के
ये सच्चाई ज़मानों मना है।
है नहीं कोई शक इसमें, कभी
तेरा गुरूर भी ढल जाना है॥

आने लगी मेरे सपनों में भी तुम अब
यह मेरा नहीं, घरवालों का कहना है।
हर जगह तुम ही तुम नज़र आती हो
लगता है अब सिर्फ तेरा ही आशिकाना है॥

सदियों से तेरे एक रहम का
मुहताज तेरा ये याराना है।
तेरे गुफ़्तगू का हर अंदाज़
कुछ और नहीं, शायराना है॥

तुम हो नहीं कोई बेरहम दिल यारा,
बेदर्द और बेवफ़ा तो, ये ज़माना है।
है नहीं कोई गिला शिकवा तुम से,
सिर्फ यही हर पल तुम्हें बताना है॥

हे एहसास तुम्हें भी मेरी बेइंतहा उल्फत का,
तेरा मासूम प्रेम- प्रसंग भी मैंने पहचाना है।
अब हर के लब्जों पर कुछ और नहीं प्रिय,
बस हमारी उल्फ़त का ही अफसाना है॥

दरस है ये हमसफ़र असरसों से,
कब तेरे साथ दो कदम चलना है।
असर न होगा किसी जुल्मी सितम का,
ये जो हर एक का हम पर नज़राना है॥

परवाह नहीं मुझे मेरे हमदम, अब
सूर्य – तपन और घनघोर घटाओं का।
तेरी काली – काली रेशमी ज़ुल्फों का,
जब हर पग पग पर आशियाना है॥

अब पाकीज़ा मोहब्बत को भी
सरेआम गुनहगार क्यों बनना है।
ये कोई ज़ज़्बाती किस्सा तक नहीं,
सिर्फ तेरे ही समां का परवाना है॥